v/;k; & "k"Ve

foopuk

प्रस्तुत शोध का निर्माण विभिन्न आयु लिंग व जन्म चक्र के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता पर उनके व्यक्तित्व के प्रभाव को जानने के लिये किया गया है।

मूलतः देखा जाता है। भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व भिन्न–भिन्न रंग को प्राथमिकतादेते हैं। जिसमें कि व्यक्तित्व को कुछ कारक भी प्रभाव डालते हैं। आयु, लिंग व जन्म क्रम सामान्यतः व्यक्ति कोई भी रंग देख कर अपनी राय बता देता है कि उसको यह पसंद है अथवा नहीं, परन्तु उसकी पसंद नापसंद के पीछे क्या कारण है, यह जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध के अन्दर किया गया है। जिसमें कि शोधार्थी के अर्न्तमन में कुछ प्रश्न घूमते हैं और उनका उत्तर पाने का प्रयास ही शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र रहा है।

जैसे कि– भिन्न–भिन्न व्यक्ति भिन्न रंग क्यों पसंद करते हैं क्या कारण है कि एक रंग को लेकर दो व्यक्तियों को एक ही राय नहीं होती । तथा अवस्था बदलने के साथ क्यों व्यक्ति की रंग प्राथमिकता बदल जाती है।

एक ही अवस्था के दो व्यक्ति एक ही रंग के प्रति अलग अलग विचार क्यों रखते हैं।

एक ही समय पर एक रंग को लेकर व्यक्तियों के मत अलग–अलग होते हैं।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर की खोज गृह प्रबन्ध के उप विषय रंग के अंदर आती है और गृह प्रबंध की छात्रा के द्वारा ही यह प्रयास सम्भव है। अतः इसी अवधारणा के द्वारा शोध की पृष्ठभूमि तैयार की गई है।

अतः शोध के क्रियान्वयन के पश्चात् एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण करने के पश्चात् शोधार्थी स्वयं को इस स्थिति में पाती है कि स्वयं निर्मित विभिन्न परिकल्पनाओं के परिणमों के आधार पर शोध निष्कर्षो का प्रतिपादन कर सकें।

1. 'kks/kkFkh dh izFke ifjdYiuk ;g g fd fofHkUu 0;fDr;ksa dh jax ikFkfedrk esa lkFkd fHkUurk ik;h tkrh g –

तालिका क्रमांक 1 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कुल 300 व्यक्तियों में लाल, पीला, नीला, हरा, बैंगनी, नारंगी में सर्वाधिक लाल रंग को पसंद किया गया उसके बाद पीला फिर नारंगी उसके बाद नीला फिर बैंगनी तथा अंत में हरे रंग को पसंद किया गया। विभिन्न अवस्थाओं में रंग प्राथमिकता में भिन्नता पाई गई है जो कि परिकल्पना के परिप्रेक्ष्य में सार्थक सिद्ध होती है।

2. 'kks/kkFkh }kjk fodfIr f}rh; ifjdYiuk ;g g fd fofHkUu fyax d 0;fDr;ksa dh jax ikFkfedrk esa lkFkd :i ls fofHkUurk ikbZ tkrhA

इस विभिन्नता को दर्शाने के लिये शोधार्थी ने कुल 2 उपकल्पनाओं का निर्माण किया है।

¼v½ i:"kksa dh jax ikFkfedrk esa lkFkd :i ls fHkUurk ik;h tkrh gA

तालिका क्रमांक 6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विभिन्न व्यक्तियों की लिंग के अनुसार रंग प्राथमिकता में भिन्नता पाई जाती है, जिसमें कुल 150 पुरूषों में क्रमशः लाल रंग की प्राथमिकता 24.7% है, पीले में 19.33%, नीले में 14% हरे में 8.66% नारंगी में 16% बैगनी में 6.66% है।

इसका काईमान 10.45 है जो अपनी विभिन्नता 0.001 पर सार्थक रूप से प्रगट करती है।

(ब) efgykvk dk jx ikFkfedrk e lkFkd fHkUurk ik;h tkrh gA

तालिका क्रमांक 7 का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महिलायें सर्वाधिक लाल रंग को प्राथमिकता देती है, उसके बाद नारंगी, पीला, नीला, हरा, अंत में बैगनी रंग को पसंद किया गया । इसी प्रकार पुरूषों में सर्वाधिक लाल,पीला,बैगनी,नारंगी,नीला व सबसे कम हरा रंग पसंद किया गया।

Wu,- Hong- Ye, Wu, - Ying - Qun, Chen,- Wen -Bin, Xu, - Ying-Hua[21] (1989) परिधान पर नमूने और रंग की प्राथमिकता जानने हेतु शोध में 60 सामान्य (चायनीज प्रौढ़) पुरूष व स्त्रियों के चुना इन्हें 16 प्रकार के नमूने और 27 प्रकार के रंगो में से चुनाव करने को कहा गया और यह पाया कि रंग चयन में पुरूषो व स्त्रीयो की रंग प्राथमिकता में सार्थक भिन्नता दिखाई दी।

Radeloff, Deanna-J[71] (1991) में वस्त्रो के आकर्षण पर रंगो की भूमिका पर अध्ययन किया, यह अध्ययन रंग चेहरे के हावभाव तथा परिधान की स्टाइल के आधार पर किया गया, इस अध्ययन में 167 महिलाओं तथा 83 पुरूष को सम्मिलित किया गया, इन्हे 6 सेट ऐसे फोटोग्रेप्स के दिखाऐ गये, जिसमे मॉडल्स ने परम्परागत तथा अपरम्परागत रंगो में वस्त्र धारण किये थे। परिणाम यह प्रर्दिशत करते है, कि महिलाओं ने अपने पंसदीदा रंग को पुरूष की अपेक्षा अधिक प्रधानता दी, पुरूष ने हल्के रंग पंसद किये, जबकि महिलाओं ने नाजुक रंग पंसद किये तथा रंग का प्रभाव चेहरे के हावभाव तथा परिधान की स्टाइल से अधिक पड़ा।

3. 'kk/kkFkh }kjk fodflr rhljh ifjdYiuk ;g g fd fofHkUu voLFkk d 0;fDr;k dh jx ikFkfedrk e lkFkd fHkUurk ikbl tkrh gA

जैसा कि तालिका क्रंमाक 14, 15, 16, 17, 18, 19 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शोधार्थी द्वारा कुल 300 व्यक्तियो में 106 बाल्यावस्था के 81 किशोरावस्था के 63 व्यस्क और 50 व्यक्ति प्रौढ़ावस्था के शामिल किये गये हैं व्यवहारिक परीक्षण करने के उपरान्त शोधार्थी ने पाया है कि अवस्था बदलने के

साथ–साथ रंग प्राथमिकता भी परिवर्तित होती है। तालिका यह स्पष्ट करती है कि विभिन्न आयु में रंग प्राथमिकता समान नही रहती।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं में रंग प्राथमिकता में भिन्नता पाई जाती है। इस प्रकार अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि बाल्यावस्था में सर्वाधिक लाल रंग को प्राथमिकता दी गई जबकि उसके बाद नीला, पीला, नारंगी, हरा, बैंगनी तथा किशोरावस्था में भी सर्वाधिक लाल रंग व नारंगी रंगी को लगभग समान प्राथमिकता दी गई है। उसके बाद पीला, नारंगी, बैंगनी व हरे रंग को स्थान दिया गया है। तथा प्रौढ़ावस्था में सर्वाधिक पीला रंग, बैगनी रंग को प्राथमिकता दीहै। जिसमें कि पाये गये रंग प्राथमिकता अध्ययन के अनुसार सिद्ध होता है कि विभिन्न अवस्थाओं में रंग प्राथमिकता परिवर्तन स्वतः स्वभाविक प्रक्रिया है।

हमें ज्ञात है कि व्यक्ति की बाल्यावस्था स्वच्छन्द अवस्था होती है जिसमें बालक को अच्छे, बुरे कम जयादा अपने पराये का बोध नहीं होता है व अवस्था बढ़ने के साथ वह समाज व परिवार के साथ रहकर नित नये परिवर्तन के साथ खुद को समायोजित करने लगता है ऐसे में वह रंगों के प्रति भी अपने आपको जागरूक करता है और विभिन्न चटकीले रंगों में अपना स्वप्न लोग सजाता है। जब भी बालक को अपना कपड़ा या वस्तु पसंद करने की बात करें तो वह सबसे पहले वही वस्तु पसंद करता है जिसका रंग आकर्षित करता हो। अतः बाल्यावस्था आकर्षण की अवस्था है।

वहीं किशोरावस्था में किशोर ऐसे रंगों के प्रति रूझान दिखाता है जो न ज्यादा भड़कीले है न शांत अतः वह हाल ही में बाल्यावस्था से किशोरावस्था में कदम रखता है। और वह दोनों अवस्थाओं के बीच तालमेल रखने में कठिनाई एवं असमायोजन का भाव लिये रहता है। वह समझ नहीं पाता है क्या उसके लिये हितकर या अहितकर ऐसे में वह रंगों के प्रति भी अपनी पूर्ण सहमति नहीं जता पाता है। इनके मुख्यतः नारंगी, बैंगनी, गुलाबी हल्के रंग पसंद होते हैं परन्तु समाज

में प्रचलित फैंशन व रंग इनको अपनी ओर आकर्षित करते हैं और फैशन अनुरूप भी ये खुद को दौड़ में शामिल कर लेते हैं। अतः कहने का तात्पर्य है कि किशोर उस अवस्था से गुजरता है जिसका सीधा संबंध उनके संवेंगों से होता है। और यही संवेग उसकी रंग प्राथमिकता को भी प्रमाणित करते हैं। किशोर कल्पनाशील, चिंतनशील, उदवेग पूर्ण व्यवहार रखता है और नारंगी, बैगनी, हल्का नीला, गुलाब आदि रंगों को प्राथमिकता देता है।

वहीं प्रौढ़ावस्था जीवन की जिम्मेदरी से परिपूर्ण अवस्था होती है। इस अवस्था में व्यक्ति समाज में एक अपनी पहचान बन चुकी होती है। वह जिन रंगों को प्राथमिकता देता है वह उसके व्यक्तित्व अनुसार समाज में मान्य किये जाते हैं। जिनकी प्राथमिकता देना उसका उत्तरदायित्व होता है। नहीं तो वह समाज से उपेक्षित महसूस करता है। परनतु आज का प्रौढ़ अपनी जिन्दगी खुले रूप से ऊर्जा युक्त जीना चाहता है। जल्दी ही अवस्था का प्रभाव दिखाना नहीं चाहता। इस कारण आज कल व्यक्ति को भड़कीले रंग भी पसंद आते हैं। कहने का तात्पर्य है कि जिन रंगों को किशोर प्राथमिकता देते हैं वह उन रंगों को पहनने में अब हिचकता नहीं है। और खुद की उम्र छिपाकर वह अपने आप को युवा दिखाने में गर्व महसूस करता है। इस काल में प्रौढ़ व्यक्ति गुलाबी, क्रीम, नारंगी, बैंगनी, हल्के पीले व हरे रंग को प्राथमिकता देता है।

Desprels- Fraysse,- Annie[11] (1991) में बालको के रंगो के गुणों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये अध्ययन किया, जिसमें 5–6 वर्ष की आयु के 30 बालक तथा 6–7 वर्ष के 20 बालक लिये गये, इन्हे 4 स्वंतत्र रूप से वर्गीकृत कार्य करने को दिये गये, प्रत्येक कार्य में विभिन्न उपयोग की गई साम्रगी एक दो रंग के गुणो को जानने के उद्देश्य से (लालपन, पीलापन,नीलापन) अध्ययन के परिणाम से स्पष्ट हुआ कि 5 से 6 वर्ष के बालक रंगो की विभिन्नता के प्रति अधिक संवेदनशील हैं। 6 से 7 वर्ष की आयु में बालक अधिक स्थायी प्रत्यक्षीकरण प्रस्तुत करते है। इनके परीक्षण के क्रम पर आयु का प्रभाव पड़ता है, तथा बालक उपकरण के गुणो को रंगो के साथ ग्रहण करते है।

Huang,- Xiting, Huang, wel, Li,- Xiaroang (1991) में चीनी लोगो पर रंग का प्रतीकात्मक प्रभाव देखने के लिये स्नातक पूर्व विद्यार्थियों पर प्रयोग किया गया, जिसमें आयु 17 से 22 वर्ष की इसी प्रकार 20 से 40 वर्ष के आयु के मध्य 736 मजदूर लिये गये तथा 20–40 वर्ष आयु के 467 पुतारियो को अध्ययन में सम्मिलित किया गया, एक प्रश्नावली तैयार की गयी, जिसमें आयताकार लाल,नांरगी,पीले, हरे, नीले, बैंगनी तथा काले बॉक्स या पेटिया बनाई गई, जिसमें सहचर्य विधि द्वारा शब्दो को भरना था, शब्द के विभिन्न समूह बनाये गये, उनमें ऐसे शब्दो को भरना था, जो किसी विशेष रंग के कारण संवेगो को प्रगट कर रहे थे।प्रत्येक शब्द समूह को 12 मूल संवेगो से जोड़ा गया था। इससे प्राप्त परिणामो को मनोवैज्ञानिक व्यक्ति संगठन के आधार पर विश्लेषित किया गया, तथा सार्थक परिणाम प्राप्त हुए।

Rudduck,- Gillian-A, Harding, - Graham - F-A[16] (1994) में शैशावस्था के बाद के रंगो के प्रभाव का अध्ययन किया, अध्ययन हेतु एक से तीन वर्ष के 26 बच्चे लिये, इस अध्ययन में यह पाया, कि बालको का लाल रंग तथा हरे रंग के प्रति कपड़ो पर अधिक आकर्षक देखा गया।

Mecacci,- Luciano; Viggiano,- Maria - Pia[59] (2002) में व्यस्को तथा बालको के रंगो के नाम पर शोध कार्य हेतु (6–10) वर्ष की आयु के 168 बालक तथा बालिकाऐं लिये गये तथा औसतन 26 वर्ष के 80 व्यस्क पुरूष एवं महिलाऐ ली गई, इन्हे 20 रंगो की चिप प्रदान की गई, इसमें लाल, हरा, पीला, नीला रंग प्रमुख थे। प्राप्त प्रतिक्रियाओं को 7 भागो में वर्गीकृत किया गया, विभिन्न व्यक्तियो द्वारा रंगो का विभिन्न प्रकार से नामकरण किया गया। जैसे– हल्का हरा, हरा–पीला, गाढ़ा हरा–पीला इत्यादि शोध निष्कर्ष यह बताते है कि आयु के साथ रंगो की पहचान में स्पष्टता में वृद्धि होती है।

परन्तु इन अवस्थाओं के बावजूद व्यक्ति को आयु भी रंग प्राथमिकता पर असर डालती है जिनका अवलोकन तालिका क्रमांक 26, 27, 28, 29, 30, 31 में करेंगे।

व्यक्ति की आयु रंग प्राथमिकता को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है जिसको कि हम अपने दैनिक व्यवहारिक जीवन में प्रयोग में भी लाते हैं। भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व भिन्न–भिन्न रंग को प्राथमिकता देते हैं। जिसमें कि व्यक्तित्व को कुछ कारक भी प्रभाव डालते हैं। आयु, लिंग व जन्म क्रम सामान्यतः व्यक्ति कोई भी रंग देख कर अपनी राय बता देता है कि उसको यह पसंद है अथवा नहीं, परनतु उसकी पसंद नापसंद के पीछे क्या कारण है, यह जानने का प्रयास शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध के अन्दर किया गया है। जिसमें कि शोधार्थी के अर्न्तमन में कुछ प्रश्न घूमते हैं और उनका उत्तर पाने का प्रयास ही शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र रहा है।

जैसे कि– भिन्न–भिन्न व्यक्ति भिन्न रंग क्यों पसंद करते हैं क्या कारण है कि एक रंग को लेकर दो व्यक्तियों को एक ही राय नहीं होती । तथा अवस्था बदलने के साथ क्यों व्यक्ति की रंग प्राथमिकता बदल जाती है।

एक ही अवस्था के दो व्यक्ति एक ही रंग के प्रति अलग अलग विचार क्यों रखते हैं।

एक ही समय पर एक रंग को लेकर व्यक्तियों के मत अलग–अलग होते हैं।

इन्हीं प्रश्नों के उत्तर की खोज गृह प्रबन्ध के उप विषय रंग के अंदर आती है और गृह प्रबंध की छात्रा के द्वारा ही यह प्रयास सम्भव है। अतः इसी अवधारणा के द्वारा शोध की पृष्ठभूमि तैयार की गई है।

अतः शोध के क्रियान्वयन के पश्चात् एकत्रित तथ्यों का विश्लेषण करने के पश्चात् शोधार्थी स्वयं को इस स्थिति में पाती है कि स्वयं निर्मित विभिन्न परिकलपनाओं के परिणमों के आधार पर शोध निष्कर्षो का प्रतिपादन कर सकें।

4. 'kk/kkFkh dh prFk ifjdYiuk ;g g fd fofHkUu tUeØe d 0;fDr;k dh jx ikFkfedrk e lkFkd vrj ik;k tkrk gA

तालिका क्रंमाक 4 यह स्पष्ट करती है कि कुल 300 व्यक्तियो में 150 महिला व 150 पुरूष है जिसमें प्राथमिक जन्मे व्यक्तियो कि संख्या 98 है जिसमे 62 महिलाये व 36 पुरूष है तथा द्वितीयक जन्में व्यक्ति 117 है जिसमे 27 महिलाये 90 पुरूष है तथा तृतीयक जन्मे व्यक्ति कुल 85 है जिसमें 61 महिलाये 64 पुरूष है।

तालिका क्रमांक 20, 21, 22, 23, 24, 25 को देखने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक जन्मे बालक–बालकों के रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है। विभिन्न व्यक्तियों की भिन्न रंगों को लेकर प्राथमिकता उनके जन्म क्रम से प्रभावित होती है। क्योंकि बालक का परिवार में क्रम उसके वातावरण में भिन्नता लाता है। यह सिद्ध करता है। इस प्रकार उसका जन्मक्रम व्यक्त्वि पर प्रभाव डालता है और व्यक्तित्व रंग प्राथमिकता को प्रभावित करता है।

तालिका द्वारा स्पष्ट है कि प्राथमिक जन्मे बालकों में सर्वाधिक लाल रंग को प्राथमिकता देते हैं तथा द्वितीयक जन्म व्यक्तियों ने सर्वाधिक नारंगी रंग को प्राथमिकता दी है व तृतीयक जन्म व्यक्तियों में सर्वाधिक बैंगनी व लाल दोनों रंगों के समान प्राथमिकता दी है।

अतः परिकल्पना सिद्ध करती है कि विभिन्न जन्मक्रम के व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है। जन्मक्रम वह क्रम है जिस क्रम में बालक परिवार में जन्म लेता है यह क्रम उसको परिवार के प्रति भूमिका निभाने में सहायता प्रदान करता है।

प्राथमिक बालक वह होता हे जो सबसे पहले परिवार का सदस्य बनता है वह कई लोगों के प्यार व दुलार एवं ध्यान का एक मात्र केन्द्र बिन्दु होता है। वह सबसे अपने आपको घिरा व सुरक्षित महसूस करता है। पहले जन्म क्रम वाले बच्चों का व्यक्तित्व समायोजन दूसरे जन्मक्रम वाले बच्चे की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है क्यों जन्मे बच्चे का तथा ऐसे व्यक्ति स्वच्छ व निर्भयमुक्त होते हैं और वह लाल, पीले, नीले, नारंगी आदि रंगों को प्राथमिकता देते हैं।

जबकि वहीं दूसरी ओर दूसरे जन्में बालक को माता पिता का अधिक ध्यान प्राप्त नहीं होता। अतः वह आत्म निर्भर, अपने निर्णयों का खुद लेने वाला व दूसरे के देखा देखी कार्य करने वाला एवं अनुसरण पूर्ण व्यक्तित्व रखता है। अतः ऐसे बालक नारंगी रंग व पीले रंग को प्राथमिकता देते हैं।

जबकि तृतीयक जन्मे बालक या अंतिम बच्चा अपने परिवार का अंतिम या छोटा सदस्य होता है जो कि हमेशा दूसरों पर निर्भर चंचल स्वभाव का जन्मक्रम में सबसे छोटे किशोर उत्सुक, चिंतारहित, उदार एवं खुश मिजाज का होता है। वह परिवार के अपने से बड़े सदस्यों के बीच अपने आप को कभी भी बड़ा महसूस नहीं करता है। अतः गैर जिम्मेदारी एवं लापरवाही बरतता रहता है। इस कारण इनके व्यक्तित्व में बहुमुखी व्यक्तित्व पाया जाता है। और लाल, बैंगनी, नारंगी, हरा रंग आदि रंगों को प्राथमिकता देते हैं।

5. 'kks/kkFkhZ }kjk fodfLr ikpoh ifjdYiuk ;g gS fd fofHkUu vk;q ds 0;fDr;ks dh jax ikFkfedrk esa lkFkZd fHkUurk ikbZ tkrh gSA

तालिका क्रंमाक 3 में बाल्यावस्था की आयु 6–13 वर्ष, किशोरावस्था की आयु 14–21 वर्ष, वयस्क की आयु 23–31 वर्ष, और प्रौढ़ावस्था की आयु 32–40 वर्ष है। जिसमें कुल 300 व्यक्तियो में 106 व्यक्ति 6 से 13, 81 व्यक्ति 14–21, 63 व्यक्ति 23 से 31 वर्ष के तथा 50 व्यक्ति 32 से 40 वर्ष के लिये गये है।

तालिका क्रंमाक 26, 27, 28, 29, 30, 31 को देखने पर यह स्पष्ट है कि 6 से 13 वर्ष के बालक बालिकाओं में सर्वाधिक लाल रंग को पंसद किया गया है। उसके बाद 14 से 22 वर्ष के 31 किशोर–किशोरीयो ने लाल रंग को प्राथमिकता दी है। तथा 23 से 31 वर्ष के वयस्को ने सर्वाधिक पीले रंग को प्राथमिकता दी है। तथा 32 से 40 वर्ष के व्यक्तियो ने भी सर्वाधिक पीले रंग को ही प्राथमिकता दी हैं।

Meerum- Tarwogt, Mark Heaksma[122] (1995) में रंगो और संवेगो का सहसम्बन्ध जानने हेतु एक अध्ययन किया, जिसमें 72 बच्चो को अध्ययन में सम्मिलित किया, जो विभिन्न आयु समूह में सम्मिलित है, जिसमें 3 आयु समूह 6–7,7–8 तथा 6–10, तीसरा समूह 5–12, का है, जबकि एक समूह 20 से 56 आयु का लिया गया, प्रथम स्तर पर इन्हें 15 जोड़े रंगो में प्राथमिकता निश्चित करने को कहा गया, तथा दूसरे स्तर पर विशिष्ट संवेग को विशिष्ट रंग का चयन करने हेतु कहा गया, इस अध्ययन हेतु यह परिकल्पना तैयार की गई थी, कि वह कितनी बार प्रत्येक रंग का किसी विशेष संवेग से जोड़ता है, किन्तु प्रत्येक आयु समूह में यह प्राथमिकता अलग–अलग थी, विशेष रूप से छोटे आयु समूह में।

Psycho-lingua Journal[35] (2005) में **Lutfun Rasul Saikia** 60 बालको पर जो कि 10–12 वर्ष के थे तथा पाँचवी कक्षा, छटवी कक्षा तथा दसवी कक्षा के विद्यार्थी थे उन पर शोध कार्य किया, तथा उनकी कलर पिफरेन्स जानने का प्रयास किया गया, तथा कलर पिफरेन्स पर लिंग व आयु का प्रभाव जानने पर शोध किया, शोध परिणाम यह बताते है, कि बालक एवं बालिकाऐं अपनी रंग पसंद की प्रमुखता में विभिन्नता रखते हैं तथा लड़को व लड़कियो में भी रंग पंसद विभिन्नता पाई जाती है। जिसमें लड़के सबसे अधिक नीला रंग पसंद करते है, तथा सबसे कम लाल और नांरगी रंग को पसंद करते है, और पीला रंग कम पंसद करते है।

6. 'kk/kkFkh dh NVoh ifjdyiuk ;g gS fd fofHkUu 0;fDr;ksa ds 0;fDrRo esa lkFkd vUrj ik;k tkrk gSA

इस भिन्नता को दर्शाने हेतु शोधार्थी द्वारा तालिका क्रमांक 5 का निर्माण किया गया है। जिसके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विभिन्न व्यक्ति भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। कुल 300 व्यक्ति जिसमें 150 महिला में से क्रमशः 66 अंर्तमुखी, 50 बहुमुखी व 34 महिलायें उभयमुखी पायी गयी हैं तथा कुल 150 पुरूषों में से 40 पुरूष अंर्तमुखी, 27 बहुमुखी व 83 पुरूष उभयमुखी व्यक्तित्व के स्वामी पाये गये हैं।

इस प्रकार कुल 300 व्यक्तियों में 106 अंर्तमुखी, 77 बहुमुखी व 117 उभयमुखी व्यक्तित्व के पाये गये। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दुनिया में विभिन्न प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं जो कि अपने व्यवहार, रंगरूप, स्वभाव, बोलचाल, सामाजिक व आर्थिक स्तर के कारण दूसरे से किसी न किसी रूप में सर्वथा भिन्नता रखते हैं। यही भिन्नता का सम्पूर्ण समायोजन व्यक्तित्व कहलाता है जो कि एक व्यक्ति की पहचान बनता है। यही पहचान व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठा, सम्मान व नाम दिलाती है जबकि दूसरी और गलत छवि रखने वाला व्यक्ति खुद को दूसरे की नजरों में अपमानित महसूस करता है। व्यक्ति का एक से दूसरे के प्रति भिन्नता ही व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों को जन्म देती है।

अतः उपरोक्त परिकल्पना के अन्तर्गत शोधार्थी का प्रयास व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रकार जानने का है और उसके व्यक्तित्व का प्रभाव रंग प्राथमिकता पर क्या पड़ता है। यह उसका अध्ययन क्षेत्र है।

अतः शोधार्थी की छठवी परिकल्पना 0.05 के मान पर सार्थक सिद्ध होती है। शोधार्थी द्वारा छठवी परिकल्पनाओं को 2 उपपरिकल्पनाओं में बांटा गया है।

¼v½ fofHkUu iq:"kksa ds 0;fDrRo esa lkFkZd varj ik;k tkrk gSA

¼c½ fofHkUu efgykvksa ds 0;fDrRo esa lkFkZd varj ik;k tkrk gSA

जो कि तालिका क्रंमाक 32 के अवलोकन से स्पष्ट होता है।

अ– छठवी परिकल्पना की पहली उपकल्पना कल्पना के अनुसार विभिन्न पुरूषों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है। जिसको तालिका को देखने पर स्पष्ट प्रतीत होता है कि कुल 150 पुरूषों में 26.66% अंर्तमुखी 18% बहिमुगी व 55. 33% उभयमुखी व्यक्तित्व के प्रभाव पाये गये हैं।

ब– परिकल्पना छठवी की दूसरी उपकल्पना के अनुसार विभिन्न महिलाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है। तालिका क्रमांक स्पष्ट करती है कि 150 महिलाओं में 44% महिलायें अंर्तमुखी 33.33% बहिमुखी व 22.66% महिलायें उभयमुखी व्यक्तित्व की पायी गयी हैं।

अतः छठवी परिकल्पना यह स्पष्ट करती है व्यक्तित्व के प्रकार उभयमुखी, बहुमुखी व अंर्त मुखी व्यक्तित्व में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। सम्भवतः इसका कारण तीनों प्रकार के व्यक्तित्व की अपनी विशेषतायें होती हैं।

Lushar Colour test के अनुसार किसी व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थिति के बारे में पता लगाया जा सकता है, लूशर के रंग परीक्षण में आठ रंगो का चयन किया गया है, जिसमें स्लेटी लाल, नीला, हरा, पीला, बैंगनी, सफेद, तथा काला रंग शामिल है। इस परीक्षण के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले गये है। उनके अनुसार स्लेटी रंग को प्राथमिकता से चुनने वाला व्यक्ति प्रत्येक तरह की गतिविधियो से मुक्त और निर्लिप्त स्वभाव का स्वामी होता है, यह रंग न तनाव रहित व्यक्तित्व का द्योतक है, और न ही विश्राम का।

Vevekova,- Lada[46] (2003) में रंग मनोवैज्ञानिक रंगो की अनुभूति और उनके चयन के मनोवैज्ञानिक आधारो पर अपना अध्ययन करते हुए 1968 में ''सजीचोस्लोवक साइक्लॉजी'' जनरल में अपनी खोज छपवाई बाद में अपने अध्ययन का सारांश करते हुए, उनकी रूचि रंगो के गुण की अनुभूति की क्योंकि व्यक्ति की भावना पद्यति व्यक्तित्व एवं मूढ़ से रंगो के चयन का संबंध होता है। रंग चयन संबंधी खोजो का मूलभूत रूझान अपनी खोजो से रंग चयन सिद्धांत का परीक्षण करना। बाद में रंग चयन से सबंधित खोजे मनोनिदानात्मक परीक्षणों के निर्मित

करने से संबंधित थी, यद्यपि रंगो के चयन के ये क्रमिक आधार बतलाये गये पर अंतः व्यक्ति भेदों को भी अनदेखा नहीं किया गया। रंग चयन की सामान्य क्रम पद्यति के आलावा रंग चयन का संवेगो मूढ़ से अनुबंधित होना पाया गया, यदि रंगो का उपयोग मनोनिदात्मक उपकरणों के रूप में किया जाए तब रंग और मानसिक तथ्य के बीच संबंध होना परिणाम स्वरूप रंगो का व्यक्ति की पद्यति समझने हेतु प्रयोग किया।

7. 'kks/kkFkh dh lkroh ifjdYiuk ;g gS fd fofHkUu 0;fDr;ksa ds 0;fDrRo ,oa mudh jax ikFkfedrk esa lkFkd fHkUurk ik;h tkrh gSA

तालिका क्रमांक 33 को देखने से स्पष्ट होता है कि भिन्न व्यक्तित्व के लोगों की विभिन्न रंगों को लेकर रंग प्राथमिकता में भिन्नता पाई जाती हैं । यह स्पष्ट होता है कि अंर्तमुखी व्यक्ति सबसे अधिक नीला रंग पस्रद करते हैं उसके बाद हरा क्रमशः बैगनी, नारंगी, पीला व अंत में लाल रंग के प्रति प्राथमिकता पाई गई। इस प्रकार ही बहुमुखी व्यक्तियों में क्रमशः सर्वाधिक लाल, पीला, नारंगी, हरा, बैगनी व अंत में नीला रंग पसंद किया है। व उभयमुखी व्यक्तित्व सर्वाधिक पाय्र जाते हैं ये व्यक्तित्व अंर्तमुखी व बहुमुखी के बीच के व्यक्तित्व होते हैं। इनकी रंग प्राथमिकता दोनों से मिलती जुलती रहती है।

अतः उभयमुखी व्यक्तियों की रंग प्राथमिकता का क्रम इस प्रकार है– सर्वाधिक पसंद रंग लाल, व नीला फिर पीला, बैगनी, हरा व अंत में नारंगी रंग आता है। जिसको देखने से स्पष्ट होता है कि उभयमुखी व्यक्ति समयानुसार अपनी सोच व भूमिका में परिवर्तन कर लेते हैं।

इस प्रकार की रंग प्राथमिकता यह सिद्ध करती है रंग प्राथमिकता पर व्यक्तित्व का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

अतः शोधार्थी की सातवी परिकल्पना कि विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं उनकी रंग प्राथमिकता में सार्थक रूप सम्बन्ध से पाया जाता है। यह सत्य सिद्ध हुयी है। शोधार्थी द्वारा व्यक्तित्व के वर्गीकरण को P.V. युंग द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण से लिया है। जिसके अनुसार व्यक्तित्व तीन भागों में बांटा जा सकता है। अंर्तमुखी, बहुमुखी व उभयमुखी।

अतः तालिकानुसार परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अनुसार ही रंग पसंद करता है।

बर्हिमुख व्यक्ति के स्वामी अपने जीवन के आदर्शो का एवं नियमों का कठोरता से पालन करते हैं। और अपनी जिन्दगी में वस्तु निष्ठता अधिक रखते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति खुश मिजाज तथा उल्लास वाले हैं। यह किसी से भी आसानी से घुल मिल जाते हैं व अपने दिल की बात आसानी से कह पाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में खुलापन महसूस करते हैं व ऊर्जा एवं शक्ति से भरपूर जीवन जीने में विश्वास रखते हैं। ये सच्चाई के प्रति उन्मुख व समायोजन करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में लाल, पीला, नारंगी, बैंगनी व हरा रंगों को पसंद किया है। जिनमें कि नारंगी, लाल रंग ऊर्जा एवं शक्ति का, नीला शांति का, बैंगनी रंग समायोजन का प्रतीक है।

इसी प्रकार अंर्तमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों की यह विशेषता होती है कि समायोजन करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं व किसी के सामने आसानी से खुल नहीं पाते हैं। व अपने आप में जीने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति शांत स्थान पर बैठना, शोरगुल से दूर व सोम्य स्वभाव के होते हैं ऐसे लोग चिंतन की तुलना में अपने भाव पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं। ऐसे लोग चिंतनशील, संवेदनशील एवं विनम्र होते हैं ऐसे व्यक्तियों ने सर्वाधिक नीला रंग फिर हरा, बैंगनी, पीला, नारंगी व सबसे कम लाल रंग में प्राथमिकता प्रदर्शित की है। इन्होंने सर्वाधिक नीले व हरे रंग को प्राथमिकता दी। ये कि सरलता, सोम्य, विनम्रता एवं शांति के प्रतीक

है। द्वितीय क्रम में बैंगनी व पीले रंग को प्राथमिकता दी है। जो कि कल्पनाशीलता को प्रकट करती है।

इसके अलावा शोधार्थी ने उभयमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का रंग प्राथमिकता का अध्ययन किया है और पाया है कि इस प्रकार के व्यक्ति अंर्तमुखी व बहुमुखी दोनों प्रकार के व्यक्तित्व का मिला जुला रूप होते हैं आर व दोनों से मिलते जुलते रंग पसंद करते हैं क्योकि ऐसे व्यक्ति दोनों प्रकारके व्यक्तित्व की विशेषताओं का समयोजन होते हैं। जो कि थोड़े शांत, थोड़े उन्मुख, थोड़े शर्मीले, थोड़े चंचल भी होते हैं। ऐसे व्यक्ति चटख व सोम्य दोनों प्रकार के रंग को पसंद करते हैं। तालिका अध्ययन से स्पष्ट है। लाल व नीला दोनों ही रंगों को समान प्राथमिता दी है जो कि व्यक्तित्व में स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

Colt,- Christopher; Mclntosh,- Lyn, greenway,- Philip[10] (2003) ने व्यक्तित्व चारित्रिक गुणों पर रंग प्राथमिकता के प्रभाव का अध्ययन किया तथा इन्हें कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हुए, अपने इस शोध कार्य में इरंग प्राथमिकता का प्रत्यक्षेपण प्रभाव देखा तथा व्यक्तित्व कारको तथा रंग प्राथमिकता का सार्थक संबंध ज्ञात हुआ, जो व्यक्तियों की अभिवृत्तियों के अनुसार विभिन्नता पाई गई, इस हेतु उत्तरदाताओं को रंग के जोडें दिखाये गये, रंगो से अत्यधिक प्रभावित होने वाले कारकों में स्वीकार उक्ति को प्राथमिकता प्राप्त हुई।

Kong,- Kegin; Chen,- Mingjie; Cai-Biao; Ma- Qianfeng[19] (1996) ने एक अध्ययन में, चीन में रंग प्रारामिड़ परीक्षण का व्यक्तित्व मूल्यांकन करने हेतु चीन में उपयोग किया गया एवं राष्ट्रीय प्रतिमानो को जापानी प्रतिमानों से तुलना की, 722 सामान्य पुरूष और महिला प्राथमिक स्कूलो एवं प्रौढ़ व्यक्तियों, शिक्षकाओं, वैज्ञानिक, व्यवसायिक, क्लर्क, महिलाओं और किसानो और खुदरा व्यवपारियों पर अध्ययन करते हुए साथ ही उनमें से 151 चीनी पुरूष महिला अपराधियों मस्तिष्क विक्रतियां रोगियों पर, इस परीक्षण में रंगो का उपयोग करते हुए, 15–20 मिनिट में 6 प्रशासनिक बनवाये गये और प्रयोज्यो की पंसद ना पसंद को रखा गया, आयु वर्ग

सामान्यतः असामान्यतः वर्ग एवं कार्यअनुसार समूहों की तुलना की गई और बाद में उनका सहसंबंध व्यक्तिगत परीक्षण से खोजते हुए, उनकी वैद्यता और विश्वनीयता को स्थापित करने की चेष्टा की।

Radeloff, Denna- J[9] (1991) में रंगो की प्राथमिकता के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करने हेतु शोध कार्य किया, जिसमे अर्न्तमुखी तथा बर्हिमुखी व्यक्तित्व के 111 फीमेल अण्डर ग्रेजुएट विद्यार्थी लिये गये, परिणाम यह प्रदर्शित करते है। कि दोनो ही प्रकार के व्यक्तित्व में मौसम के अनुसार रंग चयन में सत्यता का सार्थक अंतर (ड़िफरेंस) पाया जाता है, बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी कम इनटेनसिटी वेल्यू रंग में प्राथमिकता का अध्ययन करने पर इन्टोवर्स तथा बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति में सत्ययता का सार्थक अंतर नही पाया गया, इसी प्रकार क्रोमा रंग चयन प्राथमिकता में भी बर्हिमुखी तथा अर्न्तमुखी में कोई सार्थक अंतर नहीं दिखा।

•••